अध्याय 18.
मनुष्यगति

1. मनुष्यगति किसे कहते हैं ?

1. जिस कर्म का निमित्त पाकर आत्मा मनुष्य भाव को प्राप्त करता है, वह मनुष्यगति है।
2. जो मन से उत्कृष्ट होते हैं, वे मानुष कहलाते हैं और इनकी गति को मनुष्यगति कहते हैं।
3. जो मन के द्वारा नित्य ही हेय-उपादेय, तत्त्व-अतत्त्व, धर्म-अधर्म का विचार करते हैं और कार्य करने में निपुण हैं, वे मनुष्य कहलाते हैं और उनकी गति को मनुष्यगति कहते हैं। (जी.का.,गा.149)
4. मनु (कुलकर) की संतान होने से मनुष्य कहलाते हैं।

2. क्षेत्र की अपेक्षा मनुष्य के कितने भेद हैं ?

क्षेत्र की अपेक्षा मनुष्य के दो भेद हैं-

1. **कर्मभूमिज** - जहाँ पात्रदान के साथ आजीविका चलाने के लिए असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प कर्म किए जाते हैं। अशुभ कर्म से नरक, शुभ कर्म से स्वर्ग, तपस्या के द्वारा (मुनि बनकर) सर्वार्थसिद्धि विमान तक एवं समस्त (अष्ट) कर्मों का क्षय करके मोक्ष इसी कर्मभूमि से प्राप्त होता है और कर्मभूमि में जन्म लेने वाले कर्मभूमिज कहलाते हैं।
2. **भोगभूमिज** - जहाँ आजीविका चलाने के लिए षट्कर्म नहीं करने पड़ते हैं। जहाँ दस प्रकार के कल्पवृक्षों से प्राप्त सामग्री का भोग करते हैं। वह भोगभूमि कहलाती है और भोगभूमि में जन्म लेने वाले भोगभूमिज कहलाते हैं। (सर्वार्थसिद्धि, 3/37/437)

3. कल्पवृक्ष किसे कहते हैं वे कौन-कौन से हैं ?

मनवांछित वस्तु को देने वाले कल्पवृक्ष कहलाते हैं। वे दस प्रकार के होते हैं-

1. **पानाङ्ग** - मधुर, सुस्वादु, छः रसों से युक्त बत्तीस प्रकार के पेय को दिया करते हैं।
2. **तूर्याङ्ग** - अनेक प्रकार के वाद्य यंत्र देने वाले होते हैं।
3. **भूषणाङ्ग** - कंगन, कटिसूत्र, हार, मुकुट आदि आभूषण प्रदान करते हैं।
4. **वस्त्राङ्ग** - अच्छी किस्म (सुपर क्वालिटी) के वस्त्र देने वाले हैं।
5. **भोजनाङ्ग** - अनेक रसों से युक्त अनेक व्यञ्जनों को प्रदान करते हैं।
6. **आलयाङ्ग** - रमणीय दिव्य भवन प्रदान करते हैं।
7. **दीपाङ्ग** - प्रकाश देने वाले होते हैं।
8. **भाजनाङ्ग** - सुवर्ण एवं रत्नों से निर्मित भाजन और आसनादि प्रदान करते हैं।
9. **मालाङ्ग** - अच्छी-अच्छी पुष्पों की माला प्रदान करते हैं।
10. **तेजाङ्ग** - मध्य दिन के करोड़ों सूर्य से भी अधिक प्रकाश देने वाले इनके प्रकाश से सूर्य, चन्द्र का प्रकाश कांतिहीन हो जाता है। (तिलोयपण्णत्ती, 4/346)

पानाङ्ग जाति के कल्पवृक्ष को मद्याङ्ग भी कहते हैं। ये अमृत के समान मीठे रस देते हैं। वास्तव में ये वृक्षों का एक प्रकार का रस है, जिन्हें भोगभूमि में उत्पन्न होने वाले आर्य पुरुष सेवन करते हैं, किन्तु यहाँ पर

अर्थात् कर्मभूमि में जो मद्य पायी लोग जिस मद्य का पान करते हैं, वह नशीला होता है और अन्तःकरण को मोहित करने वाला है, इसलिए आर्य पुरुषों के लिए सर्वथा त्याज्य है। (आदिपुराण, 9/37-39)

4. आचरण की अपेक्षा मनुष्य के कितने भेद हैं ?

आचरण की अपेक्षा मनुष्य के दो भेद हैं-आर्य और म्लेच्छ।

धर्म-कर्म सहित उत्तम गुण वाले मनुष्य आर्य कहलाते हैं और जो धर्म कर्म गुण से रहित आचार-विचार से भ्रष्ट हों, वे म्लेच्छ कहलाते हैं। आर्य मनुष्य दो प्रकार के हैं- ऋद्धि प्राप्त आर्य और ऋद्धि रहित आर्य। बुद्धि, तप, बल, विक्रिया, औषध, रस और क्षेत्र (अक्षीण महानस व अक्षीण महालय) रूप इन सात प्रकार की ऋद्धियों के धारी मुनिराज ऋद्धि प्राप्त आर्य कहलाते हैं। ऋद्धि रहित आर्य पाँच प्रकार के हैं-

1. **क्षेत्रार्य** - काशी कौशल, मालवा आदि उत्तम देशों में उत्पन्न हुआ क्षेत्रार्य है।
2. **जात्यार्य** - इक्ष्वाकु, ज्ञाति, भोज आदि कुलों में उत्पन्न हुआ जात्यार्य है।
3. **कर्मार्य** - असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प रूप कर्म करने वाले कर्मार्य है।
4. **चारित्रार्य** - संयमधारी मनुष्य चारित्रार्य है।
5. **दर्शनार्य** - व्रत रहित सम्यग्दृष्टि मनुष्य दर्शनार्य है। (सर्वार्थसिद्धि, 3/36/435)

म्लेच्छ मनुष्यों के दो भेद हैं-अन्तर्द्वीपज और कर्मभूमिज। अन्तर्द्वीपों में उत्पन्न हुए अन्तर्द्वीपज म्लेच्छ, म्लेच्छ खण्ड में उत्पन्न म्लेच्छ और शक, यवन, शवर व पुलिन्दादिक कर्मभूमिज आर्यखण्ड के म्लेच्छ हैं।

5. अन्तर्द्वीपज म्लेच्छ कहाँ रहते हैं, उनका आकार एवं आहार क्या है ?

अन्तर्द्वीपज जहाँ निवास करते हैं, वह कुभोगभूमि कहलाती है। यह लवण समुद्र में जम्बूद्वीप के तट पर चारों दिशाओं में चार, चारों विदिशाओं में चार, प्रत्येक दिशा, विदिशा के मध्य एक-एक अर्थात् आठ तथा भरत, ऐरावत के विजयार्ध पर्वत के दोनों छोरों पर एक-एक अर्थात् कुल चार एवं हिमवन् और शिखरी पर्वत के दोनों छोरों पर एक-एक अर्थात् कुल चार। इस प्रकार कुल 4+4+8+4+4=24 अन्तर्द्वीप हैं। इसी प्रकार 24 अन्तर्द्वीप लवण समुद्र के दूसरे तट पर और कालोदधि समुद्र के दोनों तटों पर भी 24-24 हैं। इस प्रकार कुल 48+48=96 कुभोगभूमियाँ हैं। इनमें कुमानुष निवास करते हैं, इसलिए इन्हें कुभोगभूमि कहते हैं।

उन अन्तर्द्वीपों में पूर्व दिशा में एक टांग वाले, दक्षिण में पूँछ वाले, पश्चिम में सींग वाले और उत्तर में गूँगे। आग्नेय आदि विदिशाओं में शष्कुली कर्ण (मत्स्य कर्ण), कर्ण प्रावरण, लम्बकर्ण और शशकर्ण अर्थात् खरगोश के कर्ण के समान होते हैं। इसी प्रकार शष्कुली कर्ण और एक टांग आदि के बीच में अर्थात् अंतर्दिशाओं में आठ कुमानुष सिंह, अश्व, श्वान, महिष, वराह, शार्दूल (व्याघ्र, बाघ), घूक और बंदर के समान मुख वाले होते हैं। हिमवन् पर्वत की पूर्व दिशा में मत्स्य मुख और पश्चिम दिशा में कालमुख, दक्षिण विजयार्ध के पूर्व दिशा में मेषमुख और पश्चिम दिशा में गौमुख। शिखरी पर्वत के पूर्व में मेघमुख और पश्चिम दिशा में विद्युतमुख तथा उत्तर विजयार्ध के पूर्व में आदर्शमुख और पश्चिम दिशा में हाथी मुख वाले कुमानुष रहते हैं। इनमें एक टांग वाले मनुष्य गुफाओं में निवास करते हैं और मिट्टी का आहार करते हैं तथा शेष मनुष्य फल-फूलों का आहार करते हैं तथा वृक्षों पर रहते हैं। कुभोगभूमि में जघन्य भोगभूमि की व्यवस्था रहती है। (त्रिलोकसार, 913-916)

6. म्लेच्छों में कितने गुणस्थान होते हैं ?

अन्तर्द्वीपज म्लेच्छ (कुभोगभूमि) का जन्म तो मिथ्यात्व, सासादन के साथ होता है, किन्तु वह सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकता है। अतः प्रथम गुणस्थान से चतुर्थ तक। सब म्लेच्छखण्डों में प्रथम गुणस्थान ही होता है। म्लेच्छखण्ड से आर्यखण्ड में आए हुए कर्मभूमिज म्लेच्छ तथा उनकी कन्याओं से उत्पन्न हुई चक्रवर्ती की संतान कदाचित् दीक्षा के योग्य भी होती है। (जै. सि.को., 3/347)

7. कुभोगभूमि में उत्पन्न होने का क्या कारण है ?

मिथ्यादेवों की भक्ति में तत्पर, दिगम्बर साधुओं की निंदा करने वाले। जो जिनलिङ्ग धारण कर मायाचारी करते हैं। गृहस्थों के विवाह आदि कराते हैं। जो सूक्ष्म व स्थूल दोषों की आलोचना गुरुजनों के समीप नहीं करते हैं, आदि कुमानुष म्लेच्छों में उत्पन्न होने के कारण हैं। (ति.प., 4/2540-2551)

8. भोगभूमि में उत्पन्न होने का क्या कारण है ?

जो मिथ्यात्व भाव से युक्त होते हुए भी मंद कषायी हैं, मद्य, माँस, मधु और उदम्बर फलों के त्यागी हैं। जो यतियों को आहार दान देते हैं या अनुमोदना करते हैं। ऐसे कर्मभूमि के मनुष्य और तिर्यञ्च भोगभूमि में उत्पन्न होते हैं एवं जिन मनुष्यों ने पहले मनुष्यायु, तिर्यञ्चायु का बंध कर लिया है एवं बाद में क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त किया है ऐसे सम्यग्दृष्टि मनुष्य भी भोगभूमि में उत्पन्न होते हैं। (ति.प., 4/369-372)

9. कुभोगभूमि में मनुष्य ही रहते हैं या तिर्यञ्च भी रहते हैं ?

कुभोग भूमि में मनुष्य एवं तिर्यञ्च दोनों के युगल रहते हैं। (ति.प., 4/2552)

10. संमूर्च्छन मनुष्य की क्या विशेषता है ?

संमूर्च्छन मनुष्य छः पर्याप्तियाँ एक साथ प्रारम्भ करता है, किन्तु एक भी पर्याप्ति पूर्ण नहीं करता और मरण हो जाता है। इनकी आयु क्षुद्रभव प्रमाण एवं अवगाहना अङ्गुल के असंख्यातवें भाग रहती है इनका मात्र नपुंसक वेद ही होता है ये स्त्रियों के काँख वगैरह एवं गुह्य (गुप्त) स्थानों में उत्पन्न होते हैं। आँखों से नहीं देखे जाते।

11. मनुष्यगति में कौन-कौन से दुःख हैं ?

संमूर्च्छन मनुष्य हुआ तो वह शीघ्र मरण कर गया। गर्भज हुआ तो, सात माह से दस माह तक गर्भ में रहना पड़ता है, वहाँ अङ्ग, उपाङ्ग को संकुचित करके रहना पड़ता है और जब जन्म लेता है तो बड़ी वेदना होती है। बाल अवस्था में भूख, प्यास, रोग को सहन करता है, क्योंकि वह अपने कष्ट को कह नहीं सकता है। बाल अवस्था में ही माता-पिता का अवसान हो गया, तो दूसरों के द्वारा दिया गया भोजन करके बड़ा होता है और बड़ा हुआ पढ़ गया तो ठीक नहीं तो सबके सामने नीचा देखना पड़ता है। किसी की स्त्री नहीं है। किसी की स्त्री है किन्तु दुष्टा (दुःचरित्र) है। किसी की अच्छी तो है, किन्तु जल्दी ही मरण को प्राप्त हो गई। किसी का पुत्र नहीं है, किसी का है, किन्तु दुर्व्यसनों में फँसा हुआ है। किसी का पुत्र आज्ञाकारी भी है, पढ़ने में होशियार भी है, किन्तु अल्पायु में ही मरण को प्राप्त हो गया। स्त्री, बच्चे भी हैं, किन्तु बीमार रहते हैं, कोई स्वस्थ है, किन्तु धन नहीं है। धन है, नष्ट हो गया तो भी कष्ट होता है। आज वर्तमान में बेरोजगारी से लोग पीड़ित हैं। विवाह की उम्र बढ़ती जा रही है, जिससे माता-पिता भी परेशान हैं। कन्या का विवाह करना है तो दहेज चाहिए और न जाने कैसे-कैसे दुःख हैं, बड़े भाई को भी छोटे भाइयों से अपमानित होना पड़ता है। पिता को भी पुत्र से अपमानित होना पड़ता है। संक्षेप में कहा जाए तो यही कहेंगे, कोई तन दुःखी, कोई मन दुःखी कोई धन दुःखी है। (कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 44-57)

12. क्या सभी मनुष्य दुःखी रहते हैं ?

भोगभूमि के मनुष्यों में तो सुख है, किन्तु कर्मभूमि के मनुष्यों में सुख भी है, दुःख भी है। जिनका पुण्यकर्म का उदय है, वे सुखी हैं, जिनका पाप कर्म का उदय है, वे दुःखी हैं।

13. मनुष्यगति में कितने गुणस्थान होते हैं ?

भोगभूमि के मनुष्यों में 1 से 4 तक गुणस्थान होते हैं एवं कर्मभूमि में 1 से 14 तक गुणस्थान होते हैं।

14. मनुष्य कहाँ रहते हैं ?

मनुष्य अढ़ाईद्वीप में रहते हैं।

15. अढ़ाईद्वीप का क्या अर्थ है ?

अढ़ाईद्वीप एवं दो समुद्र। जम्बूद्वीप, लवण समुद्र, धातकीखण्ड, कालोदधि समुद्र एवं पुष्कर द्वीप आधा।

16. क्या मनुष्य, मानुषोत्तर पर्वत का उल्लङ्घन कर सकता है ?

मानुषोत्तर पर्वत के उस ओर उपपाद (मनुष्य गति में जन्म लेने वाले), मारणान्तिक समुद्घात तथा केवली समुद्घात को प्राप्त हुए मनुष्यों को छोड़कर और दूसरे विद्याधर तथा ऋद्धिधारी मुनि भी कदाचित् नहीं जाते हैं। इसलिए इस पर्वत का मानुषोत्तर यह नाम सार्थक है। (सर्वार्थसिद्धि, 3/35/434)

17. मुक्ति कहाँ से होती है ?

मुक्ति अढ़ाईद्वीप से होती है।

18. भोगभूमि एवं समुद्रों से मुक्ति कैसे होती है ?

ऋद्धिधारी मुनि भोगभूमि जाकर मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं एवं पूर्व बैर रखने वाले देव भी मुनियों का अपहरण कर उन्हें भोगभूमि एवं समुद्रों में फेंक देते हैं, वे वहाँ से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

19. विद्याधर कौन हैं एवं कहाँ रहते हैं ?

जो जाति, कुल व तप विद्याओं से युक्त होते हैं, वे विद्याधर कहलाते हैं। ये समस्त विद्याधर विजयार्ध पर्वतों के दस योजन ऊपर दक्षिण-उत्तर में इनके नगर बने हैं, वहाँ रहते हैं। यहाँ पर सदा चतुर्थकाल रहता है एवं गुणस्थान प्रथम से पञ्चम तक होते हैं। विद्याओं का त्याग कर मुनि बनकर मोक्ष भी जा सकते हैं। अतः सभी गुणस्थान भी हो जाते हैं। (जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश, 3/544, 1/275)

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. पानाङ्ग जाति के कल्पवृक्ष नारियल का पानी भी देते हैं।
2. वस्त्राङ्ग जाति के कल्पवृक्ष धोती, दुपट्टा नहीं देते हैं।
3. भोजनाङ्ग जाति के कल्पवृक्ष दाल-भात (चावल)भी देते हैं।
4. पुष्करवर समुद्र के उभय तटों पर 24-24 कुभोग भूमियाँ हैं।
5. एक टांग वाले कुमानुष मिट्टी का आहार नहीं करते हैं।

अन्यत्र खोजिए -

1. म्लेच्छ खण्डों में कौन-सा काल रहता है ?
2. कौन से विजयार्ध पर्वतों में विद्याधरों के कितने-कितने नगर बसे हैं ?
3. विद्याधर पूजन करते हैं कि नहीं ?